India's First E Magazine Dedicated to Indian Music
Bilingual

संगीत वन्दन

June 2024 Year 2 Issue 12

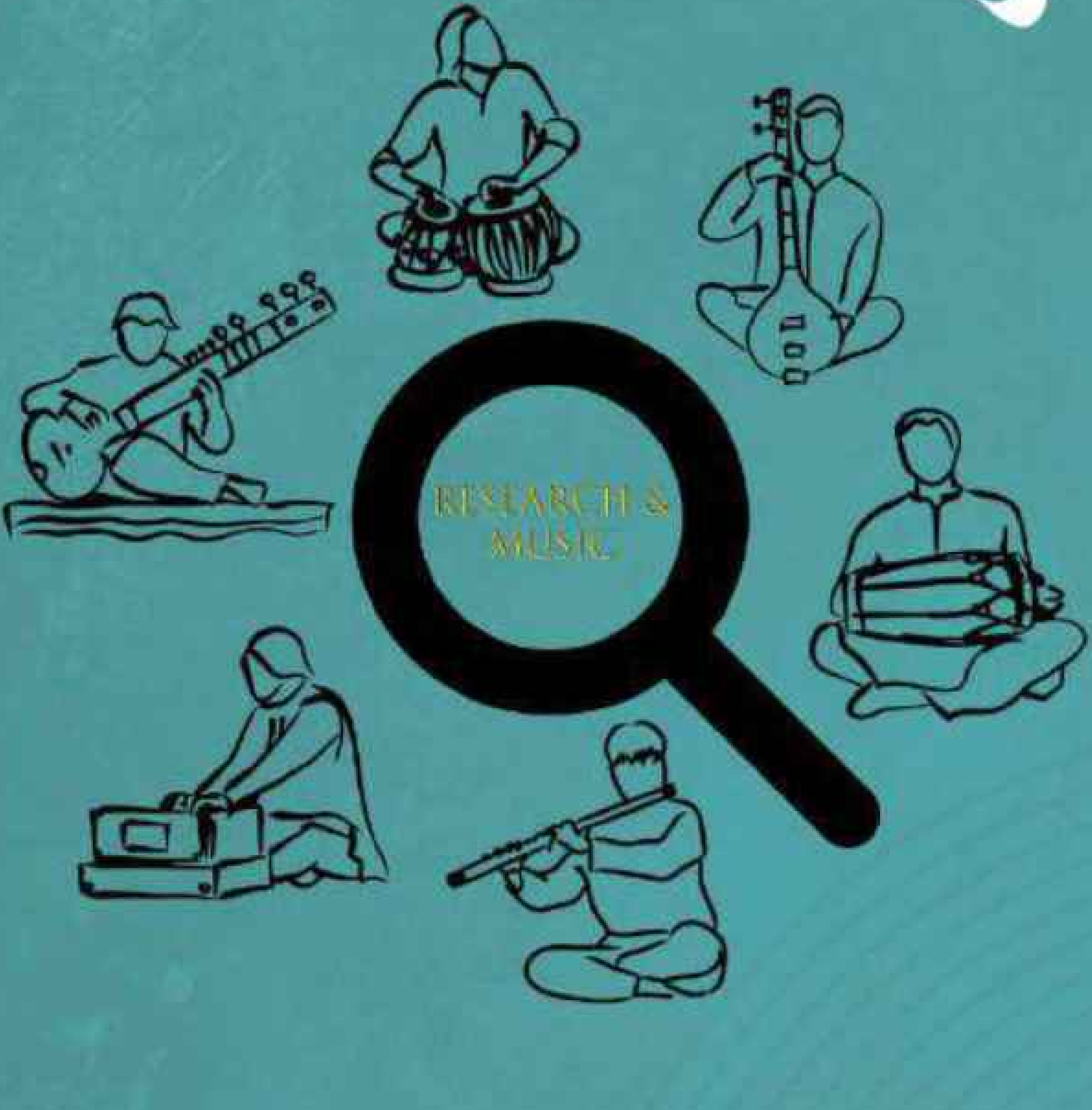

INDIAN MUSIC
& RESEARCH

Dr. Vandana Khurana
Asst. Prof. Music Vocal,
Rajasthan Sangeet Sansthan,
Govt. P.G College,Jaipur(Raj.)

संपादक की कलम से...

संगीत वन्दन के सभी पाठकों को सादर प्रणाम

प्रत्येक विषय के विकास के लिए आवश्यक होता है कि उसकी विषयवस्तु को समयानुकूल बनाया जाए और इस हेतु निरन्तर शोध / अनुसन्धान कार्य किया जाना आवश्यक होता है। संगीत विषय में शोध की संभावना को देखते हुए "संगीत वन्दन" का जून माह का अंक संगीत एवं शोध विषय पर केन्द्रित करते हुए आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत कर रहें है।

संगीत विषय में शोध अथवा अनुसंधान की अभिवृति

प्रत्येक विषय का विकास उसमें होने वाले शोध कार्य के माध्यम से ही होता है। अन्य सभी विषयों की भांति संगीत कला भी उसमें हुए निरंतर शोध कार्यों के परिणाम स्वरुप ही विकसित होती आई है। समय अनुसार संगीत कला में भी परिवर्तन हुए हैं जिनके परिणाम स्वरुप उसमें हुए शोध कार्यों के लक्ष्य एवं उद्देश्य भी समय के अनुसार परिवर्तित होते आए हैं। डॉ लक्ष्मी नारायण गर्ग ने लिखा था –
"प्राचीन काल में संगीत में शोध का लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति होता था ,मध्यकाल में शोध का लक्ष्य रंजन हो गया और वर्तमान काल में शोध का लक्ष्य मात्र नौकरी है। संक्षेप में भारतीय संगीत का यही इतिहास है।"

मुख्य बात है निरंतर शोध के प्रति रुचि व जागरूकता का बना रहना ।पाश्चात्य संगीत में किए गए अथवा किया जा रहे अनुसंधान कार्यों की तुलना में भारतीय संगीत में अनुसंधान के प्रति उदासीनता दिखाई देती है।

ऐसा नहीं है कि भारतीय संगीत के क्षेत्र में शोध सामग्री की अपर्याप्तता है बल्कि भारतीय संगीत के दोनों ही पक्षों क्रमशः क्रियात्मक व सैद्धांतिक पर प्राचीन से लेकर आधुनिक काल के संगीत आचार्यों द्वारा अत्यंत सारगर्भित ग्रंथों की रचना की गई है किंतु समय के परिवर्तन के साथ विशेष सामग्री में परिवर्तन दिखाई नहीं पड़ता और इसका कारण है शोध के प्रति उदासीनता।

संगीत विषय के विद्यार्थियों में अनुसंधान के प्रति जो उदासीनता है या जागरूकता की कमी है,उसका कारण है- अध्ययन- अध्यापन के समय उनमें शोध की अभिवृत्ति का विकास ना होना । संगीत एक विषय के रुप में विद्यालय महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर विषय के रुप में स्थापित तो हो गया है किंतु अभी तक शिक्षक व विद्यार्थी दोनों ही इसके क्रियात्मक व सैद्धांतिक पक्षों में एक संतुलन नहीं बना पाए हैं।
शास्त्र आधारित संगीत होने के नाते शास्त्र अध्ययन भी आवश्यक है और शास्त्र का निर्माण संगीत के क्रियात्मक पक्ष के स्वरुप उसके परिवर्तन एवं विकास पर आधारित होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि एक विषय के रुप में यदि संगीत को देखना है तो इसके दोनों पक्षों पर एक समान अवधान की आवश्यकता है।

अनुसंधान अथवा शोध के लिए एक अभिवृत्ति की आवश्यकता होती है और वह अभिवृत्ति निरंतर अध्ययन के परिणाम स्वरुप ही विकसित होती है अतः संगीत विषय में अनुसंधान कार्य को उचित दिशा एवं गति देने हेतु विद्यार्थियों को समय-समय पर प्रोजेक्ट वर्क, समय-समय पर सेमिनार में उपस्थित होकर इसकी रिपोर्टिंग करना, सैद्धांतिक विषयों पर व्याख्यान सुनना एवं उनकी रिपोर्ट बनाना, संगीत विषयों पर निबंध प्रतियोगिताएं, कलाकारों के प्रदर्शनों की समीक्षा करना आदि प्रयासों से विद्यार्थियों में अध्ययन की अभिरुचि विकसित की जानी चाहिए। विद्यालय ,महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय सभी स्तरों पर यह प्रयास आवश्यक रुप से किए जाने चाहिए तभी संगीत विषय में स्तरीय शोध कार्य होने की संभावनाएं बनेगी।

सभी लेखकों से ई-पत्रिका हेतु संगीत से संबंधित स्वतंत्र आलेख एवं ई पत्रिका के नियमित भागों (किताबों की बातें, लोकरंग, news and events एवं फिल्म संगीत)पर आधारित आलेख एवं सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

E-Mail -vandansangeet@gmail.com
Mobile No. -9664257501, 9413974931
Address - Plot No. 28 Sbi Colony, Tonk Phatak, Jaipur-302015

गीत भीमायन

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय का वैश्विक सांगीतिक आविष्कार

सारांश

डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर ने एक सभा को संबोधित करते हुए भीमराव कर्डक के जलसे और अम्बेडकरी जलसोंकारों का महत्त्व की पुष्टी करते हुए कहा था कि, "कर्डक और अन्य का एक जलसा मेरे दस सभा भाषणों के बराबर है।" यह सांस्कृतिक क्षण जब-जब की बुलंद आवाज़ बन गया और आज तक विभिन्न प्रकार से आगे बढ़ता रहा। इसने गहन वैचारिक सामाजिक संरचना की नींव रखी। अम्बेडकरी सांस्कृतिक आन्दोलन को जोरदार बढ़ावा मिला। इससे समाज की सांस्कृतिक और वैचारिक भूख मिटाने के लिए अम्बेडकरी जलसाकारों की एक पीढ़ी निर्माण हुई। अनेक जलसा कलाकार, गायक, संगीतकार, लेखक उभरे। उनका सांस्कृतिक प्रतिबिम्ब आज भी आधुनिक रुप में देखा जा सकता है। इस पीढ़ी के प्रमुख नाम हैं महाकवि वामनदादा कर्डक। वामनदादा का जन्म भारत की आज़ादी से 25 साल पहले हुआ था। वर्ष 2022 को वामनदादा कर्डक की जन्म शताब्दी और भारतीय स्वतंत्रता की वर्षगांठ के रुप में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। महाकवि वामनदादा कर्डक सांस्कृतिक दृष्टि से दूसरे चरम के कवि थे। अम्बेडकर के प्रति निष्ठा के स्तर की उनकी अभिव्यक्ति एक सामान्य रेखा पर आकर रुक जाती है। ये कवि जीवनभर क्रांतिसूर्य डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर के गीत गाना पसंद करता रहा। वे एक अम्बेडकरी एक महान ग़ज़लकार, लेखक, गीतकार, गायक और संगीतकार थे, जिन्होंने आम आदमी की रोज मर्रा की जिंदगी पर सवाल उठाकर व्यवस्था पर सवाल उठाया था, जिन्होंने एक ऐसे महान व्यक्ति के जीवन को अपनी कविताओं में कैद करने की कोशिश की, जिसने पीड़ितों के जीवन को बदल दिया। इस शोधनिबंध में वामन दादा कर्डक के उसी कार्य की समीक्षा करके उनके कार्य को मानवीय सराहना देने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है।

वामन दादा

भूमिका:- डॉ बाबासाहेब अम्बेडकर के 125वें जन्म शताब्दी वर्ष में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. बी.ए. चोपड़े, पूर्व कुलपति डॉ. प्रमोद येवले और हाल ही में वर्तमान कुलपति डॉ. विजय फुलारी की ओर से शामिल हुए । संगीत विभाग ने महाकवि वामनदादा कर्डक के बुद्ध और भीम गीतों का चयन किया और 'गीत भीमायन' का प्रदर्शन किया, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस संगीत प्रयोग को एक नई ऊंचाई पर ले जाया गया है। 'गीत भीमायन' वामनदादा कर्डक द्वारा लिखे गए 10 हजार गीतों में से चुनिंदा 100 गीतों को एकत्रित करके संकलित किया गया है, जो बाबासाहब के जीवन और विचारों को प्रस्तुत कर सकते हैं। छत्रपति संभाजीनगर के सरस्वती भुवन कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड कॉमर्स में संगीत विभाग के प्रमुख संजय मोहम्मद ने गीत भीमायन के सभी गीतों को शास्त्रीय रुप में संगीतबद्ध किया है। डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के जन्म से लेकर महापरिनिर्वाण तक की जीवन यात्रा के 100 चयनित गीतों का एक अभिनव संगीत प्रयोग किया गया। बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय को किसी भी चीज़ को हल्के में नहीं लेना चाहिए।डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय ने भारत की प्रसिद्ध टाइम म्यूज़िक कंपनी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं और अधिकांश गाने स्मृतिशेष नरेंद्र भिड़े द्वारा रचित हैं और ध्वनि रिकॉर्डिंग भी उनके अपने डॉन स्टूडियो पुणे में की गई है। इस संगीत समारोह की खास बात यह है कि देशभर से आए शास्त्रीय और लोकप्रिय संगीत के मशहूर गायकों और गायिकाओं ने अपनी आवाज़ के जरिए अंबेडकरी गीत को बड़े चाव से गाया और भारतीय संगीत में सामाजिक समानता का एक नया स्तर स्थापित किया। किसी शैक्षणिक संस्थान की ऐसी भागीदारी दुर्लभ है। इन सभी गानों की साउंड रिकॉर्डिंग अंतिम चरण में है और हमें जल्द ही कविता कृष्णमूर्ति, हरिहरन, पं. रघुनंदन पनशिकर, आरती अंकलकर-टिकेकर, साधना सरगम, सुरेश वाडकर, उत्तरा केलकर, रवींद्र साठे, सावनी शेंडे सुनने को मिलेंगे। , बेला शेंडे प्रमुख गायकों के साथ 'भीमायन' में गा रही हैं। इस परियोजना को समाज ने बहुत सम्मान के साथ स्वीकार किया है।

डॉ संजय मोहड

इस प्रोजेक्ट की खासियत यह है कि बैठक भले ही शास्त्र की है, लेकिन प्रस्तुति लोकनृत्य की हैं। गीतात्मक तुकबंदी और मेल खाते स्वर प्रत्येक गीत को अपने आप में आत्मनिरीक्षण करने के लिए मजबूर करते हैं। वामनदादा ने खुद एक साक्षात्कार में कहा है कि ''मेरा आंदोलन गाने से जन्मा है. '' उन्होंने ये भी कहा था कि ''मेरा गाना लोगों के दिलों को जोड़ने के लिए है, तोड़ने के लिए नहीं.

'' वहीं प्रयोगधर्मी संगीतकार डॉ संजय मोहड ने 'वामन को केवल पढ़ने से नहीं समझा जाता, बल्कि उसे सुनना पड़ता है' की उक्ति को जागृत करने की भूमिका निभाते हुए 'गीत भीमायन' में एक सुंदर संयोजन देखा जा सकता है गीत का चयन किस गायक या गायिका द्वारा किया जाता है यह जितना सामंजस्यपूर्ण है उतना ही यह हमारे संवैधानिक मूल्य भी हैं जो एक इंसान के रुप में पहचान को बनाए रखते हैं और उन्हें शास्त्रीय स्वरों में पिरोकर उनके आदर्शों के सामने प्रस्तुत करते हैं प्रसिद्ध गायकों के रुप में जन-जन तक बड़े सम्मान के साथ पहुंचा है। प्रत्येक गीत का अपना संगीत के साथ-साथ साहित्यिक मूल्य भी बरकरार है, उदाहरण के लिए, प्रसिद्ध गायक गायक हरिहरन द्वारा गाया गया जोग राग गीत 'थोर धुरंधर करुणा सागर' शुद्ध गांधार बाबासाहेब की धैर्यवान छवि को उजागर करता है और साथ ही कोमल गांधार करुणा की ओर बढ़ता है। . कविता कृष्णमूर्ति द्वारा गाया गया 'जनमले भीमाह्चे बल' और साथ ही चंद्रन्या नी छाया', सावनी शेंडे द्वारा गाया गया 'ये कोकिले ये भीम गीत सिंग कंठ माला दे' और 'नीली हाय बगरी जाली', 'भीमवाणी पति मेरे कानी टीच वाणी जल्ली माझी' सुरेश वाडकर द्वारा गाए गए गाने' के साथ-साथ 'जयभीम माजा सनमित्रा जयभीम माजे गणगोत्रा', रघुनंदन पनाशिकर द्वारा गाया गया, 'आज मेरे मांची कोमल काली फुल खाए पड़नी भीमचे गली' और 'उमलुन फूल मनचे भीम पथि हे वाचे', आरती द्वारा गाया गया। अंकलेकर-टिकेकर, 'गोदातिरी गिरि लेकिन लड़े। सैनिक माजा नेचा बई खरका रामाचा दरवाजा' के साथ-साथ 'माला तू दान दे', साधना सरगम द्वारा गाया गया 'ब्यखले चे मांडी मधाले' के साथ-साथ 'मी नवी कहानी खाए वाणी गेट भीमाची सोंगी'। 'विदुषी मजूषा पाटिल द्वारा गाया गया 'माना मजे अता भीमा पै अतुरले नव्या' विदुषी मजूषा पाटिल द्वारा गाया गया 'फॉर द वर्ल्ड' के साथ-साथ 'भीमरया नेता माजा', रवींद्र साठे के पहाड़ी स्वरों में गाया गया, 'घटना दिल की कुंजी है। दिल का और नई क्रांति का द्वार', और भीम का नाम भी, जो भीम के बगल में तस्वीर लेगा, और भीम के फूलों के बगीचे की खुशबू' बेला शेंडे द्वारा 'मैं लता हूं, ओह, मैं एकता हूं'। , शुभा जोशी द्वारा गाया गया, 'चालवेना मार्ग आले फोड़ पाया येग भिमाई ओफलेओन घ्याया', ई गीत...

इन बीस गानों को टाइम्स म्यूज़िक कंपनी के यूट्यूब चैनल पर रिलीज किया गया है। 'मी मूक नायक' गाना हाल ही में 14 अप्रैल 2024 को वर्तमान कुलपति डॉ विजय फुलारी के मार्गदर्शन में रिलीज किया गया था।

मशहूर सारंगी वादक उस्ताद दिलशाद खान ने खुद कहा था कि सारंगी वाद्ययंत्र का इस्तेमाल पहली बार भीमगीता में इसी गाने में किया गया था. दिलशाद खान का मूल पारंपरिक परिवार सारंगी वादन का है और यह उनकी 7वीं पीढ़ी है जो संगीत के क्षेत्र में मजबूती से खड़ी है. बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों का ऐसा अनूठा संयोजन 'गीत भीमायन' में है। महाकवि वामनदादा कार्डक के गीतों का चयन एक तरह से इन महान अम्बेडकरी गीतों का सम्मान है, जिसका समन्वय डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय ने किया है डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर और महाकवि वामनदादा कार्डक, इसमें कोई संदेह नहीं है कि अजरामर का संगीत सांस्कृतिक इतिहास कई पीढ़ियों तक डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के मराठवाड़ा में शैक्षिक आंदोलन के प्रचार और प्रसार में सबसे बड़े योगदान का गवाह रहेगा। यह बाबासाहेब का मूल विचार था कि मराठवाड़ा में एक विश्वविद्यालय होना चाहिए, आज छत्रपति संभाजीनगर में डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय के साथ एमजीएम विश्वविद्यालय अस्तित्व में आया है। इन दोनों विश्वविद्यालयों ने महान कवि वामनदादा कार्डक को सम्मानित किया है। एमजीएम यूनिवर्सिटी ने महाकवि वामन दादा को मरणोपरांत डी लिट की उपाधि देकर अंबेडकरी गतिशीलता को और बढ़ाया है।

आने वाली पीढ़ियों के लिए अम्बेडकरी विचारधारा को विकसित किया, अम्बेडकरी आंदोलन के प्रति अटूट निष्ठा रखने वाले महान व्यक्ति, 'गीत भीमायन' के शेष अस्सी गीतों को जल्द ही जारी करेंगे और पूरा करेंगे। 'गीत भीमायन' एवं वर्तमान कुलपति डॉ. विजय फुलारी महाकवि वामनदा कर्डक के स्मृति दिवस पर उन्हें इस आशा के साथ नमन करते हैं कि वे उनके कार्यकाल को चिरस्थायी बनाये रखेंगे।

संदर्भ ग्रंथसूची

1. महाकवी वामनदादा कर्डक, समग्र वाङमय खंड 5
2. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, छ. संभाजीनगर, वेबसाईटवरील गीत भिमायन वेबपोर्टल.
3. गीत भीमायन, 1 ते 10 गीत, टाईम्स्म्युझिक मराठी
4. गीत भीमायन, 1 ते 10 गीत, टाईम्स्म्युझिक मराठी

डॉ. सागर दिवाकर चक्रनारायण
सहायक प्राध्यापक ,संगीत विभाग
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडाविश्वविद्यालय,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

RESEARCH IN THE FIELD OF MUSIC

Research means re-searching in energy, in an existence, in some state of being. If we look into Music, it appears like a subject (but this is beyond that and almost same existence and experience with life). Music is an inevitable part of human life all over the world. Music is ancient and it evolved with time. Naturally any subject which has been observed over a long period of time, by millions of music experts and exponents, always carries a deep level of research. Especially the classical music, may it be eastern or western, carries a long line up of maestros who have already contributed a lot in the field of research.

When it comes to practical application in music, the research procedure has always been action oriented. For example in Indian Music a Guru teaches his disciples to sing in a particular procedure which might be new in the music industry and perhaps the guru even learnt in a different way. But their deep and intention for the sake of welfare of music had have made it possible to bring new components. The students did the practice and based on the observation of that practice, they could reach a conclusion which later used to get carried forward from generation to generation. The research represents outbox thinking intending the welfare of the subject which naturally got reflected in musicians' contribution. If we talk about research, with the reference of Indian Music, I would like to talk about the'Shrutinandan' procedure which is invented, re-searched, established and carried forward by my Gurujee Padmabhushan Padmashree Pandit Ajoy Chakrabarty, in which procedure I had also learnt music from my very tender age of five. I have always observed my Gurujee to be searching for something new may it be for Indian Raga music or only Swaras and Sur or Shabdon(Lyrics and it's way of expression)for other genre songs of Indian Music. Gurujee has always told that initially he applied the procedure on her daughter who is none other than today's Vidushi Kaushiki Chakrabarty.

Later after the establishment of Shrutinandan, the procedure was applied to thousands of students which helped them envisioning the notes and the rhythm and tempo in Indian Taal system. The procedure did not stop there. After almost twenty five years or more it is spread up much more than our childhood. This happens because of the mindful thoughts and thoughtful minds of musicians with a constant focus on music or its particular area with an intension of upgradation in its quality.Now if I share about the academic side research, I would love to talk confidently based on my observation. Myself being a performer, initially I felt very bad when I was stuck in sitting in a confined place in my home or university and working for the research project. But when I started to focus on its positive aspects, I found that there have been so many. It helped me to develop a mindset, to build discipline, focus, punctuality and patience in a differentlevel. These are the qualities which should be there in every conqueror's or successful person's personality. But in this time span I have worked the more on myself.

Researcher always carries a vision, but in order to reach that vision the execution plays the most important role which requires the said qualities in the researcher's personality. In addition to that Music research allows us to analyze Gayaki (Singing style) with every detail which is very important to develop musicianship and as well as very helpful to create and enlarge musicians vision. Apart from that it gives musicians a vast opportunity to explore huge amount of data which might a musician would never have explored without this compulsion. Music research keeps history and, records significant roles of society which had reflected in that time music.

Music research brings an opportunity to the researchers to interview music exponents and celebrities and musicologists and also to survey in mass level and to get conception about their perception about music and the impact they are receiving through and because of Music. In addition to that now science and technology has contributed a lot in the digitalized music industry. Because of their research, a major shift had
occurred in the recording industry.

So in the conclusion it can be said that research keeps a subject and civilization active, alive and progressive indeed. Side by side this research industry also is generating sources of income for the researches and helping them in evolving up their consciousness in their fraternity which is a blessing. So with folded hands I pray to the higher self to protect, nourish and bless the research procedures and the researchers and help them in enlightening their thoughtfulness while discovering the new horizons and aspects.

Dr Manali Ghosh
Professional Vocalist, Musicologist,
Music Composer, Entrepreneur,
Author, Actor.

सुर सम्राज्ञी की सांगीतिक यात्रा

"नैना बरसे रिमझिम रिमझिम"

संगीत वन्दन के पिछले दो अंक से लता जी के साथ हिंदी फ़िल्मसंगीत के महान संगीतकारों की सुरमयी यात्रा को श्रृंखला रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

यूं तो लता जी ने अपने छः दशक से भी बड़े संगीत सफ़र में एक से बढ़कर एक गुणी और विलक्षण संगीतकारों की धुनों को अपनी उत्कृष्ट गायकी से सँवारा है लेकिन इस बार उस महान संगीतकार की बात करेंगे जिसके संगीत में लता जी की गायकी को न केवल एक नया आयाम मिला बल्कि इनकी सांगीतिक युति को उस दौर के महान संगीतकारों से लेकर आज के संगीतज्ञों ने भी अद्वितीय और अतुलनीय माना है। हम बात कर रहे हैं महान संगीत निर्देशक मदन मोहन की।

मदनमोहन का जन्म 25 जून 1924 को बगदाद में हुआ था। (यह वर्ष 2024 मदनजी का जन्म शताब्दी वर्ष है) 'फिल्मिस्तान' स्टूडियो के सर्वेसर्वा राय बहादुर चुन्नीलाल उनके पिता थे। उनकी शिक्षा दीक्षा मुम्बई में ही हुई। संगीत से गहरा लगाव होने के बावजूद पिता की ख़ातिर वे सेवा में भर्ती हुए। परन्तु वह नौकरी उन्हें, रास नहीं आई। त्यागपत्र देने के बाद लखनऊ के ऑल इण्डिया रेडियो के संगीत विभाग के प्रमुख के रूप में कुछ समय उन्होंने काम किया। कुछ समय बाद वे मुम्बई आ गए। अपने पिता की फ़िल्मकम्पनी (फिल्मिस्तान) होने के बावजूद भी उन्हें संघर्ष की राह पकड़नी पड़ी। उनका उद्देश्य बतौर फ़िल्मसंगीतकार पदार्पण करना था।

मदनमोहन ने सर्वप्रथम सन् 1950 में निर्माता निर्देशक देवेन्द्र गोयल की 'आँखें' फ़िल्म में संगीतकार की हैसियत से क़दम रखा। इस फ़िल्म के संगीत ने मदनमोहन को चर्चा में ला दिया। 'आँखें' के बाद लता भी मदनमोहन के साथ जुड़ीं और देवेन्द्र गोयल की अगली फ़िल्म 'अदा' (1951) के संगीत में दोनों का साथ रंग लाया। 'सांवरी सूरत मन भायी रे पिया', 'आँखों-आँखों में उनसे प्यार हो गया' और एक ग़ज़ल 'प्रीतम मेरी दुनिया में दो दिन तो रहे होते' काफी पसन्द किये गये।

लता के लिए मदन मोहन की शुरुआती रचनाएँ बहुत ही बेहतरीन हैं, फिर भी वे अधिक चर्चा में नहीं रहीं। शायद इसीलिए इन 'ग़ज़ल-पूर्व काल' (1951-58) के गीतों का और भी ज़्यादा महत्व है। समय के चलन के हिसाब से, इनमें से ज़्यादातर गीत दुखद, भावुक शैली के हैं। दरअसल,मदन का यह दृढ़ विश्वास था कि 'लता की आवाज़ तीव्र भावनात्मक गीतों के लिए सबसे उपयुक्त है' ।

लता-मदन की जोड़ी के पहले सात सालों में उनके गीतों की विविधता ने इस आम गलतफ़हमी को दूर कर दिया कि लता-मदन मोहन की जोड़ी 'ग़ज़ल और उससे आगे कुछ नहीं' है। 'तुम हो साथ रात भी हसीन है' (मोहर), 'करके बदनाम मेरी नींद हराम' (बागी), 'छोड़ मुझे ना जाना'(मदहोश) और 'उन आँखों में नींद कहाँ' (मंत्री) जैसे गाने सुनें। ऐसे बहुत से गाने हैं जो सराहे जाने का इंतज़ार कर रहे हैं!

मदन मोहन का ग़ज़लों के प्रति विशेष आकर्षण 1957-58 में स्पष्ट होने लगा। ऐसा लगता है कि यह उनके लखनऊ के शुरुआती दिनों के प्रभाव से उपजा था ।

इसके बाद उनके वाद्यवृंद में इस बदलाव के अनुरूप सितार, सारंगी, संतूर और तबले की समृद्ध ध्वनियाँ शामिल होने लगीं और यहाँ तक कि पृष्ठभूमि के तार (वायलिन), जो पहले काफी धीमे स्वर में थे, अब अधिक पूर्ण, गहरे और समृद्ध लगने लगे। कुछ आलोचकों ने इस वाद्यवृंद परिवर्तन का श्रेय प्रसिद्ध सितार-वादक रईस ख़ाँ और मदन मोहन के संगीत संयोजक सोनिक (जो बाद में सोनिक-ओमी की जोड़ी में खुद संगीतकार बन गए) को दिया है। लेकिन फिर भी 'आजा कहीं से आजा' (समुंदर), 'बदले से निकला है चाँद' (संजोग) और 'खेलो ना मेरे दिल से' (हकीकत) जैसे गीतों में बेहतरीन संगत स्कोर (विशेष रूप से प्रस्तावना) को सुनने के बाद, ऐसी धारणाओं पर संदेह होता है। एक बात तो तय है कि जब ग़ज़ल की काव्यात्मक-भावनात्मक सूक्ष्मताओं को पूरी तरह से तलाशने वाली मोहक धुन की रचना की बात आई, तो मदन मोहन दूसरों से कई साल आगे थे। लता ने हमेशा इस तथ्य का पूरे दिल से समर्थन करते हुए कहा है, "जिस तरह से वे ग़ज़लें कम्पोज़ कर सकते थे, कोई और नहीं कर सकता था।" 'हम प्यार में जलनेवालों को' (जेलर), 'ना हंसो हम पे जमाने के हैं ठुकराए हुए'

(गेटवे ऑफ इंडिया), 'वो चुप रहे तो मेरे दिल के दाग जलते हैं' (जहांआरा) और 'अगर मुझसे मोहब्बत है' (आप की परछाइयां) जैसी गजलें व्यक्तिगत रुप से उत्कृष्ट कृतियाँ थीं। लेकिन 'यूं हसरतों के दाग', 'उनको ये शिकायत है' और 'जाना था हमसे दूर' की अनुकरणीय तिकड़ी के साथ, अदालत का बेजोड़ साउंडट्रैक लता-मदन की ग़ज़ल महारत का सबसे अच्छा उदाहरण बन गया। फ़िल्म अनपढ़ की दो रचनाओं 'है इसी में प्यार की आबरू' और 'आप की नज़रों ने समझा' को सुनने के बाद, एक प्रशंसक संगीतकार नौशाद ने एक बार कहा था, "ये दो गाने मेरे पूरे जीवन में रचे गए सभी गानों के बराबर हैं।" इतनी उदार आलोचनात्मक प्रशंसा के साथ, मदन मोहन जल्द ही ग़ज़ल के बेताज बादशाह बन गए।

ग़ज़लों के अतिरिक्त उनके अन्य संगीत प्रयास भी प्रभावशाली हैं। हीर रांझा से लता का मार्मिक गीत 'डोली चढ़ते ही हीर ने बैन किये' सुनें। यह निःसंदेह हिन्दी फ़िल्मसंगीत में सबसे बेहतरीन हीर (पंजाबी लोक-संगीत) है। इसके अलावा 'कई दिनों से जी है बेकल' (दुल्हन एक रात की) में तीव्र रोमांटिक जुनून का अनुभव करें; 'मैं तो तुम संग नैन मिलाके (मनमौजी) में संयमित करुणा' 'वो भूली दास्तां' (संजोग) में भावनात्मक तूफान 'चला है कहां' (संजोग फिर से!) में हार्दिक निवेदन 'मेरी आँखों से कोई नींद लिए जाता है' (पूजा के फूल) में स्वप्निल रुमानियत 'ले चल खेवैया' (सेनापति) में लोक स्वाद 'पत्थर के भगवान पिघल जा' (नौनिहाल) में विद्रोही नास्तिकता और 'आए अबके साल दीवाली' (हकीकत) में दिल दहला देने वाला दर्द। तभी, आपको एहसास होगा कि लता के कई अलग-अलग गाने हैं, जिन्होंने बार-बार मदन मोहन की असाधारण क्षमता को साबित किया है।

राज खोसला की 1964 की सुपरनैचुरल मिस्ट्री फ़िल्म 'वो कौन थी' खास तौर पर उल्लेख किए जाने लायक है। यह उनके करियर की पहली सिल्वर जुबली फ़िल्म बनी लता की गायकी ने 'वो कौन थी' के संगीत को लोकप्रिय बनाने में प्रमुख भूमिका निभाई थी, जिसमें सदाबहार रोमांटिक 'लग जा गले' जैसा कालजयी गीत शामिल है। दिल को छू लेने वाला 'जो हमने दास्तां अपनी सुनाई' और 'नैना बरसे रिमझिम रिमझिम' यह क्लासिक गानों की एक रचनात्मक तिकड़ी है।

मदन मोहन ने संगीत में औपचारिक प्रशिक्षण नहीं लिया था, लेकिन फिर भी उनमें माधुर्य की ईश्वर प्रदत्त समझ थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत के पारखी हमेशा से इस बात के प्रशंसक रहे हैं कि उन्होंने अपनी धुनों में विभिन्न प्रकार के रागों को किस तरह से पेश किया।

मदन ने लता के लिए कई ऐसी विशेष शास्त्रीय धुनें रचीं। उनमें से एक यमन कल्याण राग पर आधारित अनपढ़ का 'जिया ले गयो जी मोरा सांवरिया' था। देख कबीरा रोया का अहीर भैरव का गीत 'मेरी वीणा तुम बिन रोए' जहाँआरा की मल्हार आधारित धुन 'हाल-ए-दिल यूं उन्हें सुनाया गया' हीर-रांझा की मांड धुन 'दो दिल टूटे दो दिल हारे' और चाचा ज़िंदाबाद की काफ़ी रचना 'बैरन नींद ना आए'। लता के भीमपलासी राग पर आधारित 'नैनों में बदरा छाए' (मेरा साया) में मदन मोहन के perfectionist होने का बहुत बड़ा योगदान है।

'मेरा साया' शीर्षक गीत की रचना करते समय, मदन मोहन अपने नंद राग आधारित धुन से खुश नहीं थे, अंत में लता ने खुद ही कुछ फिनिशिंग टच देकर इसे एक स्थायी सुंदरता में बदल दिया। नसरीन मुन्नी कबीर की डॉक्यूमेंट्री 'लता इन हर ओन वॉयस' में, लता ने मदन के ऐसे जटिल धुनों को समझाने के अनोखे तरीके को याद किया। उन्हें याद आया कि कैसे मदन हमेशा एक बहुत लंबा-चौड़ा आलाप गाते रहते थे और फिर उन्हें सुझाव देते थे कि वे सिर्फ़ वही सुर गा सकती हैं जो उन्हें पसंद हों। जाहिर है कि यह अनोखा तरीका कारगर रहा होगा क्योंकि लता के शास्त्रीय गीतों ने इस मधुर संगीतकार को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार दिलाए। पिलू-राग पर आधारित 'मैंने रंग ली आज चुनरिया' (दुल्हन एक रात की) और पहले से चर्चित भीमपलासी पर आधारित 'नैनों में बदरा छाए' ने सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय फ़िल्मी गीतों के रूप में सुरसिंगार संसद पुरस्कार जीता। यहां तक कि 1970 में उन्हें 'दस्तक' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मुख्य रुप से लता की अविस्मरणीय शास्त्रीय तिकड़ी - 'बैंया ना धरो', 'माई री मैं कैसे कहूं' और 'हम हैं मताए कूचा' के कारण मिला था।

'आप की बातें करें' (दिल की राहें) 'मोरे नैना बहाए नीर' (बावर्ची) 'बेताब दिल की तमन्ना यही है' (हंसते ज़ख्म) 'है तेरे साथ मेरी वफ़ा' (हिंदुस्तान की कसम), 'आज सोचा तो आंसू भर आए' (हंसते ज़ख्म) और 'रुके रुके से कदम' (मौसम)यादगार रहे।

मदन की संगीत-निर्माण प्रतिभा उनके करियर के अंत तक बरकरार रही। ग़ज़ल (1964) में, उन्होंने 'किसे पेश करूं' (लता का 'नगमा-ओ-शेर की सौगात' रफी का 'इश्क के गर्मी-ए-जज़्बात' और 'रंग और नूर की बारात' के लिए तीन अलग-अलग धुनें तैयार कीं। एक दशक बाद मौसम(1975) में उन्होंने 'दिल ढूंढता है' की रचना करते हुए रचनात्मक प्रयोग की वही लकीर दिखाई, दो अलग-अलग मूड में, एक बार भूपेंद्र के एकल गीत के रूप में और दूसरी बार लता-भूपेंद्र की मधुर युगल धुन के रूप में।

14 जुलाई 1975 को मदन मोहन ने दुनिया को अलविदा कह दिया। अपने पूरे जीवन में उन्हें हमेशा यह महसूस होता रहा कि उनकी प्रतिभा की सही क़द्र नहीं की गई। किस्मत से, मौत ने उन्हें नई प्रसिद्धि दिलाई। लैला मजनू 1976 का सबसे ज़्यादा बिकने वाला एल्बम साबित हुआ।

मदन मोहन के संगीत की भावनात्मक गहराई और समृद्धि में भावपूर्ण उत्कृष्ट लेखन का बहुत बड़ा योगदान रहा है। यही कारण है कि उनके संगीत में राजेंद्र कृष्ण, राजा मेहंदी अली ख़ाँ, कैफ़ी आज़मी, मजरूह सुल्तानपुरी और नक्श लायलपुरी जैसे दिग्गज शब्द-शिल्पियों के योगदान को नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता।

फिर, दिग्गज फ़िल्मनिर्माता यश चोपड़ा ने अकल्पनीय काम किया। 2004 में आई भारत-पाक प्रेम कहानी वीर ज़ारा के लिए, उन्होंने मदन मोहन की अप्रयुक्त धुनों से एक संपूर्ण संगीत-स्कोर बनाने का फैसला किया। सभी गीतों को प्रस्तुत करने के लिए लता को शामिल किया और उपयुक्त 'नई सहस्राब्दी आधुनिकीकरण' की देखरेख के लिए मदन जी के सुपुत्र संजीव कोहली को बुलाया, यश ने श्रोताओं की नई पीढ़ी के लिए मदन मोहन-लता का एक नया एल्बम पेश किया। वीर ज़ारा साल का सबसे ज़्यादा बिकने वाला एल्बम बन गया। कई धुनें बड़ी प्रभावशाली थी जैसे 'तेरे लिए', 'दो पल', 'जाने क्यों' और 'तुम पास आ रहे हो'। वीर-ज़ारा ने मदन मोहन को फिर से चर्चा में ला दिया, लेकिन असली संगीत-प्रेमी उन्हें कभी नहीं भूले। शायद मदन मोहन को अपने संगीत की अमरता का एहसास था।

लता ने मदन मोहन के संगीत पर 227 गाने गाए (176 एकल, 42 युगल और 9 मल्टी-सिंगर नंबर) जो किसी भी अन्य गायक से ज़्यादा है। लेकिन सिर्फ़ सांख्यिकीय आंकड़े ही लता-मदन मोहन की संगीत संबंधी अंतर-निर्भरता की गहराई को नहीं दर्शाते। लता के गानों के बिना, मदन मोहन की असली संगीत प्रतिभा का अंदाजा भी नहीं लगाया जा सकता और मदन मोहन की धुनों के बिना, लता के संगीत रत्नों का विशाल संग्रह अपनी चमक खो देता है।

एक बार क्रोधित आशा भोंसले ने उनसे पूछा कि वे अपनी 'साधारण' धुनें उन्हें क्यों देते रहते हैं, जबकि अपना सर्वश्रेष्ठ उनकी दीदी के लिए बचा कर रखते हैं। मदन मोहन ने उन्हें सांत्वना के कोई खोखले शब्द नहीं कहे। उन्होंने बस शांत भाव से जवाब दिया, "जब तक मैं जीवित हूँ और जब तक लता हैं, लता हमेश मेरी पहली पसंद रहेंगी!"

सन्दर्भ-

https://youtu.be/rFM5tu-lYrk?feature=shared

'lata: voice of golden era" by dr mandar v. bichu.

Dr. Gaurav jain
Renowned vocalist and Associate
Prof. Music Vocal,
Rajasthan Sangeet Sansthan,Jaipur

किताबों की बातें....

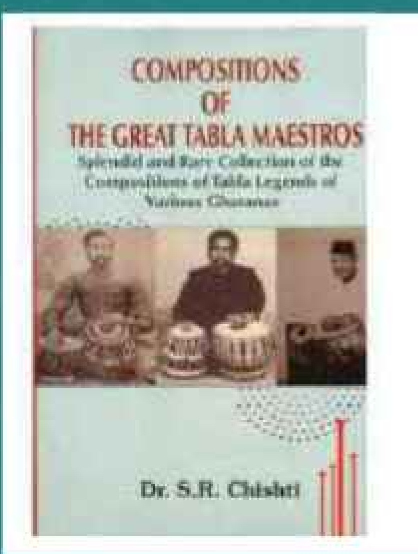

पुस्तक का नाम : 'Compositions of The Great Tabla Maestros'

लेखक का नाम : डॉ. एस.आर. चिश्ती

प्रकाशक का नाम : कनिष्क पब्लिशर्स

प्रकाशन वर्ष : 2022

भाषा: अंग्रेज़ी

प्रस्तुत पुस्तक 'Compositions of The Great Tabla Maestros' ('महान तबला वादकों की रचनाएँ') कुल आठ अध्यायों में विभक्त है, जिसमें से छह अध्याय तबला के विभिन्न घरानों की रचनाओं से संबंधित हैं और शेष दो अध्याय क्रमशः घरानों के संक्षिप्त इतिहास और हज़रत अमीर खुसरो द्वारा रचित ताल रचनाओं को विस्तृत रुप से प्रस्तुत करते हैं। विभिन्न घरानों से संबंधित प्रख्यात उस्तादों की दुर्लभ रचनाओं के साथ-साथ बंदिशों के पूर्ण चरित्र चित्रण को भी पुस्तक में शामिल करने का भरसक प्रयास किया गया है।

पुस्तक के पहले अध्याय में तबला घरानों के विकास का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। अगले छह अध्यायों में सभी छह बाजों की विशेषताओं को समझाया गया है। इसके अलावा पुस्तक में लगभग 256 रचनाएँ शामिल की हैं, लेकिन एक और अंतिम अध्याय है जिसमें हज़रत अमीर खुसरो की रचनाओं का परिचय दिया गया है। हज़रत अमीर खुसरो का भारतीय शास्त्रीय संगीत में योगदान पुस्तक के पाठकों के मन पर एक गहरी छाप छोड़ता है। अंतिम अध्याय में तबला के इतिहास और तबला कला के विकास का समापन किया है। यह पुस्तक शैक्षणिक उद्देश्य के लिए तबले के इतिहास में मील का पत्थर के समान है।

लेखक के बारे में...

डॉ. एस.आर. चिश्ती सांस्कृतिक शिक्षा केंद्र, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में संगीत (तबला) प्रशिक्षक हैं।

तबला शिक्षा...

उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा अपने पिता श्री डब्ल्यू.आर. चिश्ती (वायलिन वादक) और बंशी लाल (तबला वादक) से प्राप्त की, उसके बाद उन्होंने आचार्य गिरीश चंद्र श्रीवास्तव के साथ-साथ तबला खलीफा उस्ताद अफाक हुसैन खान (लखनऊ घराना) से औपचारिक रुप से तबला वादन सीखा।

योग्यताएँ बी.ए. अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद (यू.पी.), एम.ए. (संगीत) इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छत्तीसगढ़), नेट (संगीत) अलीगढ़ विश्वविद्यालय, पीएच.डी. संगीत (तबला), डॉ. बी.आर.अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, संगीत प्रवीण और संगीत प्रभाकर (तबला और गायन), प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, संगीत भास्कर (तबला) प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़, अदीब कामिल (उर्दू) जामिया उर्दू अलीगढ़।

लोकरंग...

गुजरात का लोक नृत्य- "टिप्पाणी"

टिप्पाणी गुजरात का एक लोक नृत्यहै जो गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र, विशेष रुप से चोरवाड़ और वेरावल क्षेत्रों में विकसित हुआ है । "मटला नृत्य" इसका अन्य नाम है। गुजराती समुदाय में, यह नृत्य शैली हिंदू त्योहारों जैसे होली और दिवाली के साथ-साथ शादी की रस्मों के दौरान भी की जाती है। टिप्पाणी गुजराती नृत्य है जिसकी उत्पत्ति चोरवाड़ जिले में हुई थी ।

टिप्पाणी वे छड़ियाँ हैं जिन्हें महिलाएँ नृत्य प्रदर्शन के दौरान सहारा के रुप में इस्तेमाल करती हैं। इससे जुड़े लोहे या लकड़ी के ब्लॉक को गार्बो कहा जाता है।यह कार्य महिला मजदूरों द्वारा तब किया जाता था जब पुरुष अपने परिवारों से दूर समुद्र में होते थे।

चोरवाड़ क्षेत्र की महिलाएं लंबी-लंबी लाठियों से फर्श पर प्रहार करती हैं और पूरे जोश के साथ जयकारे लगाती हैं, जबकि अन्य महिलाएं स्कर्ट पहनकर नृत्य करती हैं। नर्तक "टूरी" और "थाली" जैसे पीतल के बर्तनों से संगीत बनाते हैं।

यह शक्तिशाली नृत्य शैली आमतौर पर हाल्ली समाज के सदस्यों द्वारा प्रदर्शित की जाती है।टिप्पाणी की विशेषताएं टिप्पाणी नृत्य उन नृत्य शैलियों में से एक है जिसका अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है, जो उपयोगितावादी होने के साथ -साथ नर्तकों के दैनिक कर्तव्यों से भी जुड़ा हुआ है।टिप्पाणी नृत्य गुजरात के उग्र लोकनृत्य शैलियों में से एक है ।नृत्य की शुरुआत धीरे-धीरे होती है, जमीन पर तालियां बजती हैं और एक स्वर में जयकारे लगते हैं। जैसे-जैसे गति बढ़ती है, नर्तक बारी-बारी से जमीन पर ताल देते हैं और सामूहिक रुप से हथौड़ों की घुंडियों पर प्रहार करते हैं, और फिर गोलाकार में नृत्य करना शुरु करते हैं तथा बढ़ते जाते हैं।

नृत्य के अंत में, सभी महिलाएँ पंक्तियों में खड़ी होकर फर्श पर जोर से पटकती हैं। कदमों की गतिशील गति औरि टप्पावी की चाल इस नृत्य की अनूठी विशेषता है। यह आमतौर पर होली या दिवाली जैसे त्यौहारों के साथ-साथ शादी जैसे अन्य अवसरों पर भी किया जाता है। इस लोक नृत्य में प्रयुक्त वेशभूषा और वाद्ययंत्र भी पारंपरिक और प्रतिनिधिक होते हैं।

इस नृत्य के लिए 'केडिया' नामक छोटा कोट, जिसके आस्तीन और कंधे तथा किनारा काफी ऊंचा होता है, चुस्त पैंट जैसे चूड़ीदार, तथा आकर्षक टोपी या अलंकृत पगड़ी और सजावटी कमरबंद आदि सामान्य लोक पोशाकें हैं।

व्यवस्था की लय और गति को नियंत्रित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले प्रमुख संगीत वाद्ययंत्र ढोल,मारिनारा और शहनाई हैं। प्रत्येक महिला के साथ टिप्पाणी भी मौजूद रहती थीं और वे दो पंक्तियों में, एक-दूसरे के पीछे-पीछे, गाते हुए नृत्य करती हैं। टिप्पाणी लोक नृत्य ने हाल के वर्षों में लोकप्रियता हासिल की है। टिप्पाणी नृत्य दुनिया भर में रहने वालेसभी गुजरातियों के बीच प्रसिद्ध हो गया है, क्योंकि इसे अनगिनत त्योहारों और शादियों में प्रदर्शित किया जाता है।

इस नृत्य को देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें

https://youtu.be/kBr-e5eCjh0?si=6h-J95VrGmXX1W3q

https://youtube.com/shorts/UD2VpaVQTzY?si=pSPsedTmqEb-Pync

NEWS & EVENT....

1. 'प्रणामी' में दी गई गिरिजा देवी जी को श्रद्धांजलि

दिनांक 10मई ,2024 को सोन चिरैया संस्था द्वारा आयोजित प्रणामी में विश्व संगीत जगत की धरोहर श्रद्धेया गिरिजा देवी को उनके 95 वें जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित समारोह में पंडित माता प्रसाद एवं रवि शंकर जी का नृत्य, देवव्रत मिश्र का सितार वादन तथा राहुल रोहित मिश्र एवं मालिनी अवस्थी का शास्त्रीय गायन हुआ। प्रस्तुतियों के साथ ही सुंदर संस्मरणों के साथ अप्पा जी को श्रद्धांजलि दी गई।

2. चेन्नई में संपन्न हुआ स्पीक मैके का नवां इंटरनेशनल कन्वेंशन 2024

दिनांक 25-26 मई,2024 को चेन्नई स्थित आईआईटी में टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के सहयोग से स्पिक मैके का नवां इंटरनेशनल कन्वेंशन 2024 आयोजित किया गया।कार्यक्रम में उस्ताद अमजद अली खान का सरोद वादन, विदुषी सुधा रघुनाथन का कर्नाटक शास्त्रीय गायन ,विदुषी अश्विनी भिड़े देशपांडे का हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन श्री मार्गी मधु चकयार का कोडीयट्टम नृत्य तथा उस्ताद फ. वासीफुद्दीन डागर का ध्रुपद गायन हुआ।

3. जयपुर के महाराणा प्रताप सभागार में पियानो के रंग में सजे रामायण के प्रसंग

दिनांक 27 मई, 2024 को जयपुर के महाराणा प्रताप सभागार में सालाना कंसर्ट हार्मनी के कार्यक्रम 'सोल आफ सिंफनी' में दो ग्रैंड पियानो पर सीता की व्याकुलता, राम के विरह व रावण के दंभ को दर्शाते भजन प्रस्तुत किए गए। शहर के जाने-माने गायक कलाकार डॉ गौरव जैन , रिनी चंद्रा एवं रविंद्र उपाध्याय ने पियानो की धुन पर रामायण के प्रसंगों की सुरीली प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में उपस्थित श्रोताओं ने पियानो जैसे पाश्चात्य वाद्य के साथ हिंदुस्तानी रंग के भजनों के अनूठे संगम को खूब सराहा।

4. सुप्रसिद्ध ध्रुपद आचार्य स्वर्गीय पंडित लक्ष्मण भट्ट की स्मृति में आयोजित की गई एक विशेष संगीत सभा

दिनांक 24 मई, 2024 को सुप्रसिद्ध ध्रुवपदाचार्य पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग की स्मृति में जयपुर के चैंबर भवन में इंटरनेशनल ध्रुपद धाम ट्रस्ट,रस मंजरी संगीतोपासना केंद्र जयपुर तथा भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय तथा केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी के संयुक्त तत्वाधान एक विशेष संगीत सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ डॉक्टर मधु भट्ट तैलंग की शिष्य मंडली की सामूहिक गुरु एवं गणेश स्तुति परक ध्रुपद गायन से हुआ। संगीत सभा में स्वर्गीय पंडित लक्ष्मण भट्ट के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर चर्चा के साथ पंचतंत्री बेला वादक पंडित रवि शंकर भट्ट तैलंग ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपने पिता एवं गुरु पंडित लक्ष्मण भट्ट जी को श्रद्धांजलि दी । आपने राग कलावती में विलंबित आलाप ,जोड़-झाला आदि सहित स्वरों की विविध रचनाएं बजायीं।

5. "परंपरा" में गूंजे तीन पीढ़ियां के स्वर

दिनांक 2 जून 2024 को मुंबई स्थित श्री षणमुख नंदा ऑडिटोरियम में सुप्रसिद्ध वायलिन वादक डॉ एम राजम ,उनकी पुत्री डॉ संगीता शंकर तथा दोनों नातिन रागिनी- नंदनी शंकर ने कार्यक्रम- "परंपरा" अपने वायलिन वादन से तीन पीढियां के सुरों का संगम प्रस्तुत किया।

6. "बरसेगा सावन" में याद किया गया स्वर्गीय उस्ताद राशिद खां जी को

दिनांक 14 जून ,2024 को बेंगलुरु की समर्थनम ट्रस्ट फार द डिसेबल्ड एवं अकादमी का म्यूज़िक के संयुक्त तत्वाधान में 'बरसेगा सावन' नामक कार्यक्रम आयोजित किया गया । कार्यक्रम में उस्ताद राशिद खां जी को श्रद्धांजलि दी गई कार्यक्रम में सर्वप्रथम उस्ताद राशिद खां जी के संगीत पर एक समूह चर्चा हुई तथा उसके पश्चात पंडित इमाम दास व विदुषी वैशाली श्रीनिवास का गायन तथा उस्ताद शफीक खां एवं विदुषी सुमा सुधीन्द्रा की सितार - सरोद की जुगलबंदी हुई।

7. भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी संगीत महोत्सव में 'मोहिनी' ने मोहित किया श्रोताओं का मन

दिनांक 14 जून, 2024 को पुणे शहर के भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी राग मंदिर में कलाश्री संगीत मंडल एवं औध फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में '11वां भारत रत्न पंडित भीमसेन जोशी संगीत महोत्सव' मनाया गया जिसमें महिला कलाकारों के संगीत समूह "मोहिनी" ने संगीत प्रस्तुति दी। इस समूह में शास्त्रीय गायिका रुचिरा केदार, सितार वादक सुहाना बैनर्जी, तबला वादक सावनी तलवरकर,हारमोनियम वादक अदिति गराडे एवं पखावज वादक अनुजा बोरुडे सम्मिलित हैं।

8. जयपुर के जवाहर कला केंद्र में मधुरम में दिखे कथक नृत्य के रंग

दिनांक 14 जून को जयपुर के जवाहर कला केंद्र द्वारा आयोजित मधुराम में संगीत सभा में जयपुर घराने की नृत्यांगना रश्मि उपन्यास अलग-अलग रागों पर आधारित बंदिशें पर कथक नृत्य प्रस्तुत किया गणेश वंदना के साथ रशिम ने प्रस्तुति की शुरुआत की। प्रथम पूज्य नमन करने के बाद तीन ताल में निबद्ध राग मिश्र जोग की बंदिश मनवा तोरे संग बह बह जाए पर कथक किया। श्रृंगार रस से ओत-प्रोत बंदिश पर कलाकार ने बेहतर आंगिक अभिनय और फुटवर्क का प्रदर्शन किया। इसके बाद उन्होंने तीन ताल में ठुमरी पेश की। गत, तोड़े और चकरदार के बाद ताल दीपचंदी में निबद्ध मिश्र पीलू राग की ठुमरी के साथ प्रस्तुति आगे बढ़ी।

अपना Original Article ,हिंदी या English में E-Mail कर सकते हैं ।

हम अगले अंक में उसे सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

DOC /WORD format
हिंदी - Mangal, Laila /Unicode font

English - Times New Roman

Email - vandansangeet@gmail.com

Mobile/Whatsapp - 9664257501

For more details, Visit our website

www.sangeetvandan.in

Facebook Page

https://www.facebook.com/profile.php?id=100090183618512&mibextid=ZbWKwL

Instagram

https://instagram.com/sangeet.vandan?igshid=ZDdkNTZiNTM=

Twitter

https://twitter.com/vandansangeet?t=joYXnoPU8HxpDxhOd1mu4Q&s=08

Youtube

https://youtube.com/@SangeetVandan

GUIDELINES

Articles submitted for publication should be solely original and unpublished

All individuals listed as author or co-authors must made substantial contributions and approve the final version of the article to be published.

The contribution of other individuals/ organizations or sources should be recognized as per law.

Authors are responsible for any copyright clearance, factual inaccuracies and opinion expressed in their paper.

The editorial board will review article and the approved/recommended articles shall be published in the upcoming issues.

The views expressed in the articles are the views of author/authors. It is not essential for editorial board members to be in agreement or disagreement. The sole responsibilities of the views expressed in article are of the author/authors.

All decisions regarding members of Advisory board, Editorial board, Review board, Referee will rest with Editor-in –Chief.